पाठ्यक्रम संचरना सत्र – 2020–21
कक्षा – XII
विषय – समाजशास्त्र (104)

कुल अंक – 100
सैद्धांतिक – 80
प्रायोजना – 20

क्रमांक	इकाई एवं पाठ्यवस्तु	आबंटित अंक	कालखण्ड
	(A) भारतीय समाज	**32**	
1.	भारतीय समाज : एक परिचय	–	–
2.	भारतीय समाज की जनसांख्यिकी संरचना	08	10
3.	सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन	08	10
4.	सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप	08	10
5.	सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ	08	10
	(B) भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास	**48**	
6.	सांस्कृतिक परिवर्तन	10	10
7.	भारतीय लोकतंत्र की कहानियाँ	10	10
8.	भूमण्डलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन	10	15
9.	जनसंपर्क साधन और जनसंचार	08	15
10.	सामाजिक आंदोलन	10	10
	योग	**80**	**100**
	प्रायोजना कार्य	**20**	**20**
	महायोग	**100**	**120**

पाठ्यक्रम संचरना सत्र – 2020–21
कक्षा – XII
विषय – समाजशास्त्र (104)

पूर्णांक 100 अंक

सैध्दांतिक 70 अंक
प्रायोगिक 30 अंक

इकाई	विषयवस्तु	आबंटित अंक	निर्धारित कालखण्ड

भाग I : भारतीय समाज –

1. अध्याय 1. भारतीय समाज – एक परिचय

एक परिचय

2. अध्याय 2. भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना – 08 10

जनसांख्यिकीय संबंधी कुछ सिद्धांत एवं संकल्पनाएँ– माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत, जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत, सामान्य संकल्पनाएँ एवं संकेतक, **भारत की जनसंख्या का आकार और संवृद्धि, भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना, भारत में स्त्री–पुरूष का गिरता हुआ अनुपात, साक्षरता, ग्रामीण– नगरीय विभिन्नताएँ, भारत की जनसंख्या नीति।**

3. अध्याय 3. सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन– 08 10

जाति एवं जाति व्यवस्था, अतीत में जातीय, उपनिवेशवाद और जातीय, जाति का समकालीन रूप, **जनजातीय समुदाय**– जनजातीय समाजों का वर्गीकरण, **जनजाति : एक संकल्पना की जीवनी,** मुख्य धारा के समुदायों का जनजातियों के प्रति रवैया, समकालीन जनजातीय पहचान, **परिवार और नातेदारी,** मूल एवं विस्तारित परिवार, परिवार के विविध रूप।

4. अध्याय 4. सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप – 08 10

सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार– सामाजिक विषमता, सामाजिक अपवर्जन या बहिष्कार, **जाति और जनजाति**– जाति एक भेदभावपूर्ण व्यवस्था, अस्पृश्यता, जातियाँ और जनजातियो के प्रति भेदभाव मिटाने के लिए राज्य और अन्य संगठनों द्वारा उठाए गयें कदम, अन्य पिछड़े वर्ग, आदिवासी संघर्ष, **स्त्रियों की समानता और अधिकारों के लिए संघर्ष, अन्यथा सक्षम व्यक्तियों का संघर्ष,**

5. अध्याय 5. सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ – 08 10

सांस्कृतिक समुदाय एवं राष्ट्र–राज्य, सामुदायिक पहचान का महत्व, समुदाय, राष्ट्र एवं राष्ट्र– राज्य, सांस्कृतिक विविधता एवं भारतीय राष्ट्र–राज्य, भारतीय संदर्भ में क्षेत्रवाद, **राष्ट्र–राज्य एवं धर्म से संबंधित मुद्दे और पहचानें,** अल्पसंख्यकों के अधिकार और राष्ट्र–निर्माण, **सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्र–राज्य,** राज्य और नागरिक समाज।

शोध पद्धतियों की बहुलता, सर्वेक्षण प्रणाली, साक्षात्कार, प्रेक्षण, एक से अधिक पद्धतियों का सम्मिश्रण, **छोटी शोध परियोजनाओं के लिये संभावित प्रकरण एवं विषय**– सार्वजनिक परिवहन, सामाजिक जीवन में संचार माध्यमों की भूमिका, घर–परिवार में काम आने वाले उपकरण एवं घरेलू कार्य, सार्वजनिक स्थान का उपयोग, विभिन्न आयु वर्गों की बदलती हुई आकांक्षाएँ, एक वस्तु की जीवनी।

भाग II : भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास

6. **अध्याय 1. सांस्कृतिक परिवर्तन** – 10 10

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुए समाज सुधार आंदोलन, संस्कृतीकरण, आधुनिकीकरण, पंथनिरपेक्षीकरण और पश्चिमीकरण, सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न प्रकार– संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण और पंथनिरपेक्षीकरण।

7. **अध्याय 2. भारतीय लोकतंत्र की कहानियाँ** – 10 10

भारतीय संविधान– भारतीय लोकतंत्र के केन्द्रीय मूल्य, संविधान–सभा का वाद– विवाद : एक इतिहास, हित प्रतिस्पर्धी संविधान और सामाजिक परिवर्तन, संवैधानिक मानदंड और सामाजिक न्याय : सामाजिक न्याय सशक्तता की व्याख्या, **पंचायती राज और ग्रामीण सामाजिक रुपांतरण की चुनौतियाँ–** पंचायती राज के आदर्श, पंचायतों की शक्तियाँ और उत्तरदायित्व, जनजाति क्षेत्रों में पंचायती राज, लोकतंत्रीकरण और असमानता, **राजनीतिक दल, दबाव समूह और लोकतांत्रिक राजनीति।**

8. **अध्याय 3. भूमंडलीकरण और सामाजिक परिवर्तन** – 10 15

क्या भूमंडलीकरण के अंतः संबंध विश्व और भारत के लिए नए हैं? प्रारंभिक वर्ष, उपनिवेशवाद और भूमंडलीय संयोजन, स्वतंत्र भारत और विश्व, **भूमंडलीकरण की समझ–** भूमंडलीकरण के विभिन्न आयाम– आर्थिक आयाम, भूमंडलीय संचार, भूमंडलीकरण और श्रम– भूमंडलीकरण और एक नया अंतर्राष्ट्रीय श्रम–विभाजन, भूमंडलीकरण और रोजगार, भूमंडलीकरण और राजनीतिक परिवर्तन, भूमंडलीकरण और संस्कृति, जेंडर और संस्कृति, उपभोग की संस्कृति, निगम संस्कृति, अनेक स्वदेशी शिल्प, साहित्यिक परंपराओं और ज्ञान व्यवस्थाओं को खतरा।

9. **अध्याय 4. जनसंर्पक साधन और जनसंचार** – 08 15

आधुनिक मास मीडिया का प्रारंभ, स्वतंत्र भारत में मास मीडिया– दृष्टिकोण, रेडियो, टेलीविज़न, मुद्रण माध्यम (प्रिंट मीडिया), **भूमंडलीकरण और मीडिया,** मुद्रण माध्यम (प्रिंट मीडिया), टेलीविज़न, रेडियों।

10. **अध्याय 5. सामाजिक आंदोलन** 10 10

सामाजिक आंदोलन के लक्षण – सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक आंदोलन में अंतर, **समाजशास्त्र तथा सामाजिक आंदोलन–** सामाजिक आंदोलनों का अध्ययन समाजशास्त्र के लिये क्यों महत्वपूर्ण है? सामाजिक आंदोलनों के सिद्धांत, सामाजिक आंदोलनों के प्रकार– वर्गीकरण का एक प्रकारः सुधारवादी, प्रतिदानात्मक, क्रांतिकारी, सामाजिक आंदोलनों की पुराने सामाजिक आंदोलनों से भिन्नता : क्या हम पुराने तथा नए सामाजिक आंदोलनों की भिन्नता को भारतीय संदर्भ में लागू कर सकते है? **पारिस्थितिकीय आंदोलन, वर्ग आधारित आंदोलन** – किसान आंदोलन, कामगारों का आंदोलन, **जाति आधारित आंदोलन** – दलित आंदोलन, पिछड़े वर्ग एवं जातियों के आंदोलन, उच्च जाति का जवाब, **जनजातिय आंदोलन** – झारखंड, पूर्वोतर, महिलाओं का आंदोलन – 19वीं सदी के समाज–सुधार आंदोलन तथा प्रारंभिक महिला संगठन, **कृषिक संघर्ष तथा क्रांतियाँ** – 1947 के बाद, निष्कर्ष।

योग	**80**	**100**
प्रायोजना अंक	**20**	**20**
महायोग	**100**	**120**

उपसचिव
छ0 ग0 माध्यमिक शिक्षा मण्डल
रायपुर